



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-05
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

जय
भारत

भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा नियम, 1976
(यथासंशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

(क) केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

(ख) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

(ग) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

(घ) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

(ङ) क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

(i) क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

(ii) क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—सुधांशु कुमार विश्वास —	3
... प्याज —	
— पुरषोत्तम राजमणी	4
मधुमेह—	
— जनार्दन प्रसाद	6
सावन की महिमा ...—	
— विनोद कुमार त्रिपाठी	7
जल संचयन	
— सुप्रिया राय	9
प्रेमचंद.... —	
— सुबास पाठक	10
मंगल पाण्डेय	
श्वेता त्रिपाठी	13
संथाल हूल	
— इन्द्रज्योति राय	14
मैं आजाद हूँ — मानसिंह माड्री	15
चम्पारण सत्याग्रह—	
— कैलाश चंद्र धारिया	16
जरूरी है — मनीष कुमार	17
अपना देश — पूजा कुमारी	17
दो कविताएं	
— विनय कुमार झा	18
चित्र विथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email - rajbhasha.malda@gmail.com

सावन की फुहार

बारिश से भला कौन अछूता रहा है। बारिश में भीगना किसे नहीं अच्छा लगता है ? जब प्रकृति खिलखिलाती है तो किसका मन नहीं झूम उठता है ? प्राणी जगत नाच उठता है, प्रेम अपने हृदय रूपी पात्र से छलकने लगता है। प्रकृति की सबसे सुन्दरतम ऋतु है वर्षा ऋतु। साहित्य तो मानों इस ऋतु का सबसे बड़ा गवाह है जिसने शब्दों के माध्यम से मौसम के मिजाज को जन जन में सराबोर किया है।

संस्कृत साहित्य में अगर कालिदास के वर्षा ऋतु के वर्णन को सबसे अनुपम रचना मानी जाती है क्योंकि कालिदास ने वर्षा काल को महसूस किया था। पानी की फुहारों से लेकर यौवन को भिगो देने वाली बारिश में मन कैसे उल्लास और उमंग से कुलांचे मारता है या इस ऋतु में किसी विरह पक्ष की प्रेम पीड़ा कैसे उमड़ उमड़ बिलखती है, यह कालिदास से भला बेहतर कौन जान सकता है?

लगभग साहित्य में हरेक लेखकों ने इसे कागजों पर उतारकर जनमानस के मन को भिगोया है। चाहे वो हिन्दी साहित्य का मध्ययुग हो जिसमें तुलसी, सूर, जायसी आदि कवियों ने इस पावस ऋतु का सुंदर और सरस चित्रण किया है या आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला या महादेवी वर्मा द्वारा लिखी वर्षा संबंधी कविताएँ हों। बारिश आपको अपनी गोद में बैठा कर सावन के झूले जैसा आनंद देगी और आप बचपन की स्मृतियों के सागर में गोते लगाते हुए उसकी धरा को न केवल छुएंगे बल्कि आपको कई कई मोती भी प्राप्त होंगे। आप उन कागज की कस्तियों और उन सौंधी महकती धरा की खूशबु को फिर से महसूस करने लगेंगे।

दिनकर जी की सावन पर उनकी लिखी रचना है-

जेठ नहीं, यह जलन हृदय की, उठकर जरा देख तो ले,

जगती में सावन आया है, मायाविनी! सपने धो ले।

वही हरिवंश राय बच्चन की एक रचना "साजन आए, सावन आया" में उन्होंने लिखा है अब दिन बदले, घड़ियाँ बदलीं, साजन आए, सावन आया।

सावन के महीने का अपना एक अलग ही रूप होता है और इस रूप को विभिन्न साहित्यकारों ने अलग अलग रूप से चित्रित किया है। आप भी यदि महसूस करें तो मन हर्षित हुए बिना नहीं रह सकता।

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक

प्याज के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी

सन 1919 में फ्लू से चार करोड़ लोग मारे जा चुके थे तब एक डॉक्टर कई किसानों से उनके घर इस प्रत्याशा में मिला कि वो कैसे इन किसानों को इस महामारी से लड़ने में सहायता कर सकता है। बहुत सारे किसान इस फ्लू से ग्रसित थे और उनमें से बहुत से मारे जा चुके थे।

डॉक्टर जब इनमें से एक किसान के संपर्क में आया तो उसे ये जान कर बहुत आश्चर्य हुआ जब उसे ये ज्ञात हुआ कि सारे गाँव के फ्लू से ग्रसित होने के बावजूद ये किसान परिवार बिलकुल बिलकुल स्वस्थ था।



तब डॉक्टर को ये जानने की इच्छा जाणी कि ऐसा इस किसान परिवार ने सारे गाँव से हटकर क्या किया कि वो इस भयंकर महामारी में भी स्वस्थ थे.....

तब किसान की पत्नी ने उन्हें बताया कि उसने अपने मकान के दोनों कमरों में एक प्लेट में बिना छिली प्याज रख दी थी तब डॉक्टर ने प्लेट में रखी इन प्याज को माइक्रोस्कोप से देखा तो उसे इस प्याज में उस घातक फ्लू के बैक्टेरिया मिले जो संभवतया इन प्याज द्वारा अवशोषित कर लिए गए थे और शायद यही कारण था कि इतनी बड़ी महामारी में ये परिवार बिलकुल स्वस्थ क्योंकि फ्लू के वायरस इन प्याज द्वारा सोख लिए गए थे।

जब मैंने अपने एक मित्र जो अमेरिका में रहते थे और मुझे हमेशा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर बेहद ज्ञानवर्धक जानकारी भेजते रहते हैं तब उन्होंने प्याज के संबंध में बेहद महत्वपूर्ण जानकारी/अनुभव मुझे भेजा करते हैं.....

जब मैं न्यूमोनिया से ग्रसित था और कहने की आवश्यकता नहीं थी कि मैं बहुत कमजोर महसूस कर रहा था तब मैंने एक लेख पढ़ा था जिसमें ये बताया गया था कि प्याज को बीच से काटकर रात में न्यूमोनिया से ग्रस्त मरीज के कमरे में एक जार में रख दिया गया था और सुबह यह देख कर बेहद आश्चर्य हुआ कि प्याज सुबह कीटाणुओं की वजह से बिलकुल काली हो गई थी तब मैंने भी अपने कमरे में वैसे ही किया और देखा अगले दिन प्याज बिलकुल काली होकर खराब हो चुकी थी और मैं काफी स्वस्थ महसूस कर रहा था.....

कई बार हम पेट की बीमारी से दो चार होते हैं तब हम इस बात से अनजान रहते हैं कि इस बीमारी के लिए किसे दोषी ठहराया जाए। तब निःसंदेह प्याज को इस बीमारी के लिए दोषी ठहराया जा सकता है, प्याज बैक्टेरिया को अवशोषित कर लेती है यही कारण है कि अपने इस गुण के कारण प्याज हमें ठण्ड और फ्लू से बचाती है अतः वे प्याज बिलकुल नहीं खाना चाहिए जो बहुत देर पहल काटी गई हो और प्लेट में रखी गई हों।

ये जान लें कि "काट कर रखी गई प्याज बहुत विषाक्त होती हैं....

जब कभी भी फूड प्वाइजिंग के केस आते हैं तो सबसे पहले इस बात की जानकारी ली जाती कि मरीज ने अंतिम बार प्याज कब खाई थी....

और वे प्याज कहाँ से आई थीं खासकर सलाद में तब इस बीमारी के लिए या तो प्याज दोषी हैं या काफी देर पहले कटे हुए आलू? प्याज बैक्टेरिया के लिए "चुंबक" की तरह काम करती हैं खासकर कच्चा प्याज।

अगर किसी के जोड़ों में दर्द होता हो तो उन लोगों को प्याज के रस को सरसों के तेल में मिलाकर तकरीबन 6 से लेकर 8 हफ्तों तक लगातार अपने जोड़ों पर अच्छे से मालिश करनी चाहिए. ज्यादातर 45 या 50 से ज्यादा की उम्र के लोगों में यह समस्या देखने को ज्यादा मिलती है तो उनके जोड़ों के दर्द में प्याज एक असरदार दवाई के रूप में काम कर सकती है इसके अलावा आमवात में भी काफी आराम देखने को मिलता है।

आप कभी भी थोड़ी सी भी कटी हुई प्याज को देर तक रखने की गलती न करें ये बेहद खतरनाक हैं यहाँ तक कि किसी बंद थैली में इसे रेफ्रिजरेटर में रखना भी सुरक्षित नहीं है। प्याज ज़रा सी काट देने पर ये बैक्टेरिया से ग्रसित हो सकती है और आपके लिए खतरनाक हो सकती है।

यदि आप कटी हुई प्याज को सब्जी बनाने के लिए उपयोग कर रहे हो तब तो ये ठीक है मगर यदि आप कटी हुई प्याज अपनी ब्रेड पर रख कर खा रहे हैं तो ये बेहद खतरनाक है ऐसी स्थिति में आप मुसीबत को न्योता दे रहे हैं।

याद रखे कटी हुई प्याज और कटे हुए आलू की नमी बैक्टेरिया को तेजी से पनपने में बेहद सहायक होता है। कुत्तों को कभी भी प्याज नहीं खिलाना चाहिए क्योंकि प्याज को उनका पेट का मेटाबोलिज्म कभी भी नहीं पचाता।

कृपया ध्यान रखे कि "प्याज को काट कर अगले दिन सब्जी बनाने के लिए नहीं रखना चाहिए क्योंकि ये बहुत खतरनाक है यहाँ तक कि कटी हुई प्याज एक रात में बहुत विषाक्त हो जाती है क्योंकि ये टॉक्सिक बैक्टेरिया बनाती है जो पेट खराब करने के लिए पर्याप्त रहता है।

— पुरुषोत्तम राजमणि

एक सुंदर लड़की से किसी राहगीर ने पूछा – “तुम कहां रहती हो ?”

लड़की – “दिल्ली रोड...”

राहगीर – “इतनी सुंदर होकर भी तुम रोड पर रहती हो, मेरे घर चलो...”

दोस्त – गर्लफ्रेंड छोड़ गई मुझे... अब मैं क्या करूं ? ये दिल का जख्म कैसे ठीक होगा...

पप्पू – कुछ नहीं यार, ठीक हो जायेगा... बस 1 बोटल डिटाल पी ले!

चिंटू (मां से)- आपने कहा था कि परियों के पंख होते हैं और वे उड़ सकती हैं?

मां (चिंटू से)- हां, वे उड़ सकती हैं।

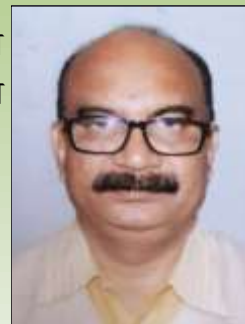
चिंटू (मां से)- कल रात डैडी नौकरानी से कह रहे थे कि तुम परी हो, वह कब उड़ेगी?

मां (गुस्से से)- बेटा, वह कल सुबह होते ही उड़ जाएगी।

ज
रा
हं
सि
ए

मधुमेह

मधुमेह अथवा डायबिटीज मेलिटस एक चपाचय यानि मेटाबोलिज्म संबंधी रोग है जिससे शरीर की कोशिकाओं द्वारा गुल्कोज का उपयोग नहीं कर पाना होता है। मधुमेह आजकल सबसे अधिक पाए जाने वाली बीमारियों में से एक है।



कारण- यौगिक क्रिया विज्ञान के इस रोग के अन्तर्संबंधी कारण माने गए हैं।

प्रथम कारण- अनियंत्रित दिनचर्या जिसके कारण पाचन प्रणाली का खराब होना।

दूसरा कारण- तनाव

मधुमेह को प्रमुख दो भागों में बांटा गया है।

कम उम्र में पाया जाने वाला जुवेनाइल डायबिटीज या बच्चों का मधुमेह तथा मैच्योरिटी ऑनसेट डायबिटीज या प्रौढ़ावस्था का मधुमेह।

रक्त शर्करा को कोशिकाओं के भीतर पहुंचाने के लिए इंसुलिन पासपोर्ट की तरह काम करती है। बिना इंसुलिन के हमारे शारीरिक कोशिकाएं गुल्कोज ग्रहण नहीं करते जिसके कारण इंसुलिन की कमी होने पर कोशिकाओं के भीतर गुल्कोज की कमी हो जाती है। शेष गुल्कोज रक्त में जमा होने लगता है। यह गुल्कोज रक्त में प्रवाहित होते रहता है परंतु इसका उपयोग नहीं हो पाता है इस कारण चपाचय असंतुलित हो जाता है।

औषधीय चिकित्सा- इंसुलिन तथा अन्य सरकारी नियंत्रक औषधियों के आविष्कार के पूर्व मधुमेह रोग होना मृत्यु का नजदीक आना माना जाता था। नई खोज से इंसुलिन की औषधीय चिकित्सा में महत्व बढ़ गया है। परंतु इन उपायों के अवांछनीय दुष्प्रभाव भी हैं। प्रतिदिन हर भोजन के पहले इंसुलिन की सुई लेना तथा जीवन भर इस पर निर्भर रहना अनेक कष्टदाई परिस्थिति है।

योग उपचार- मधुमेह की योगिक चिकित्सा किसी योग चिकित्सक की देखरेख में करने से बहुत लाभ होता है और धीरे-धीरे औषधीय चिकित्सा से निजात मिल सकती है। योगोपचार में समय देना होगा और योग अभ्यास निष्ठा से करना होगा। पवनमुक्तासन, वज्रासन, सर्वांगासन, हलासन, मत्स्यासन, भुजंगासन और गोमुखासन। सबसे महत्वपूर्ण आसन अर्धमत्स्येंद्रासन है जिससे पेनक्रियाज की क्रियाशीलता को बढ़ावा मिलता है जिससे इंसुलिन का उत्पादन शरीर में बढ़ता है। वज्रासन समूह में जितने आसान आते हैं उनको करना चाहिए।

प्राणायाम

नाडीशोधन, अनुलोम विलोम, भ्रस्तिका, कपालभाति, सूर्य नमस्कार आदि आसनों का क्षमता के अनुसार अभ्यास करें, योगनिद्रा अवश्य करें।

अन्य सुझाव

भोजन- कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन कम ले। कम स्टार्च वाला और बिना शर्करा वाला भोजन ग्रहण करें।

परीक्षण- रक्त परीक्षण नियमित करें और इसके अनुसार औषधियां कम करते जाएं।

योग- नियमित रूप से करते रहे ताकि रोग की पुनर्वापसी ना हो।

औषधियां- शर्करा कम करने वाली औषधियां योगा अभ्यास के क्रम में धीरे-धीरे कम करें या बंद कर दें।

— जनार्दन प्रसाद

सावन की महिमा

सावन का महीना और चारों ओर हरियाली। भारतीय वातावरण में इससे अच्छा कोई और मौसम नहीं बताया गया है। जुलाई आखिर या अगस्त में आने वाले इस मौसम में, ना बहुत अधिक गर्मी होती है और ना ही बहुत ज्यादा सर्दी। अपने आध्यात्मिक पहलू के कारण सावन के महीने का हिन्दू धर्म में विशेष महत्त्व बताया गया है। सावन का महीना पूरी तरह से भगवान शिव को समर्पित रहता है। इस माह में विधि पूर्वक शिवजी की आराधना करने से, मनुष्य को शुभ फल भी प्राप्त होते हैं।

नीलकंठ और भोलेनाथ बड़े लोकप्रिय नाम है भगवान शिव के। नीलकंठ का संबंध समुन्द्र मंथन से है और वह सावन के ही महीने में हुआ था। तथापि शिव का अर्थ ही अपने आप में शिवत्व को धारण करने वाला है। शिव ही दुखों से मुक्ति प्रदान कर सकता है और इसलिए वही सबकी आत्मा है। वही चेतन है और प्रकृति के साथ संयुक्त हो कर सृष्टि का प्रादुर्भाव करता है। इस सृष्टि के मूल, मध्य और अंत में शिव ही व्याप्त है शायद यही कारण है कि सावन के महीने में पूरी सृष्टि शिवमय होने का प्रयत्न करती है।

इस माह में भगवान शिव के रूद्राभिषेक का विशेष महत्त्व है। इसलिए इस माह में खासतौर पर सोमवार के दिन 'रूद्राभिषेक' करने से भगवानशिव की कृपा प्राप्त की जा सकती है। अभिषेक कराने के बाद बेलपत्र, शमीपत्र, कुशा तथा दूब आदि से शिवजी को प्रसन्न करते हैं और अंत में भांग, धतूरा तथा श्रीफल भोलेनाथ को भोग के रूप में समर्पित किया जाता है।

सावन माह की विशेषताएं

सावन माह में उपाकर्म व्रत का महत्त्व बहुत ज्यादा है इसे श्रावणी भी कहते हैं। सावन माह को पवित्र और व्रत रखने वाला माह माना जाता है। सावन माह में निराहारी या फलाहारी रहने की हिदायत है। श्रावण माह में समुद्र मंथन किया गया था। मंथन के दौरान समुद्र से निकले विष को भगवान शिव ने अपने कंठ में समाहित कर संपूर्ण सृष्टि की रक्षा की। किन्तु अग्नि के समान दुग्ध विष के पान के बाद महादेव शिव का कंठनील वर्ण हो गया। विष की ऊष्णता को शांत करने के लिए भगवान भोले को शीतलता प्रदान करने के लिए समस्त देवताओं ने उन्हें जल अर्पण किया, यही कारण है कि भगवान शिव की मूर्ति व शिवलिंग पर जल चढ़ाने का महत्त्व आज भी है।

सावन माह में एक बिल्व पत्र से शिव की अर्चना करने से तीन जन्मों के पापों का नाश होता है। एक अखंड बिल्वपत्र अर्पण करने से कोटि बिल्वपत्र चढ़ाने का फल प्राप्त होता है। शिवपूजा में रूद्राक्ष अर्पित करने का भी विशेष फल व महत्त्व है क्योंकि रूद्राक्ष शिव नयन जल से प्रगट हुआ इसीलिए शिव को अतिप्रिय है। भगवान शिव की पूजा-अर्चना करने के लिए महादेव को कच्चा दूध, सफेद फल, भस्म तथा भांग, धतूरा, श्वेत वस्त्र अधिक प्रिय हैं।

सावन की पौराणिक कथा

सावन माह के बारे में एक पौराणिक कथा है कि जब सनत कुमारों ने भगवान शिव से सावन महीना प्रिय होने का कारण पूछा तो भगवान भोलेनाथ ने बताया कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति से शरीर का त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। पार्वती ने युवावस्था के सावन महीने में निराहार रह कर कठोर व्रत किया और शिव को प्रसन्न कर उनसे विवाह किया, जिसके बाद ही महादेव के लिए यह विशेष हो गया।

वैसे सावन की महत्ता को दर्शाने के लिए और भी अन्य कई कहानियां बताई गयी हैं जैसे कि मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकण्डेय ने लंबी आयु के लिए सावन माह में ही घोर तप कर शिव की कृपा प्राप्त की थी।

पौराणिक कथाओं में वर्णन आता है कि इसी सावन मास में समुद्र मंथन किया गया था। समुद्र मथने के बाद जो हलाहल विष निकला, उसे भगवान शंकर ने कंठ में समाहित कर सृष्टि की रक्षा की; लेकिन विषपान से महादेव का कंठ... नीलवर्ण हो गया। इसी से उनका नाम 'नीलकंठ महादेव' पड़ा। विष के प्रभाव को कम करने के लिए सभी देवी-देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया। इसलिए शिवलिंग पर जल चढ़ाने का खास महत्व है। यही वजह है कि श्रावण मास में भोले को जल चढ़ाने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

भगवान शिव को सावन का महीना प्रिय होने का अन्य कारण यह भी है कि भगवान शिव सावन के महीने में पृथ्वी पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे और वहां उनका स्वागत अर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया था। माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। भू-लोक वासियों के लिए शिव कृपा पाने का यह उत्तम समय होता है।

किन्तु कहानी चाहे जो भी हो, बस सावन महीना पूरी तरह से भगवान शिव जी की आराधना का महीना माना जाता है। यदि एक व्यक्ति पूरे विधि-विधान से भगवान शिव की पूजा करता है, तो यह सभी प्रकार के दुखों और चिंताओं से मुक्ति प्राप्त करता है।



सावन के सोमवार से प्रसन्न हो जाते हैं शिव भगवान

सावन महीने के प्रत्येक सोमवार को शिव की पूजा करनी चाहिए। इस दिन व्रत रखने और भगवान शिव के ध्यान से विशेष लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यह व्रत भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए किये जाते हैं। व्रत में भगवान शिव का पूजन करके एक समय ही भोजन किया जाता है। साथ ही साथ गले में गौरी-शंकर रुद्राक्ष धारण करना भी शुभ रहता है।

काँवर का महीना

सावन के महीने में भक्त, गंगा नदी से पवित्र जल या अन्य नदियों के जल को मीलों की दूरी तय करके लाते हैं और भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। कलयुग में यह भी एक प्रकार की तपस्या और बलिदान ही है जिसके द्वारा देवों के देव महादेव को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है।

शिवपुराण में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं। इसलिए जल से उनकी अभिषेक के रूप में आराधना का उत्तमोत्तम फल है जिसमें कोई संशय नहीं है।

शास्त्रों में वर्णित है कि सावन महीने में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। इसलिए ये समय भक्तों, साधु-संतों सभी के लिए अमूल्य होता है। यह चार महीनों में होने वाला एक वैदिक यज्ञ है, जो एक प्रकार पौराणिक व्रत है, जिसे 'चौमासा' भी कहा जाता है; तत्पश्चात् सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व भगवान शिव ग्रहण करते हैं। इसलिए सावन के प्रधान देवता भगवान शिव बन जाते हैं।

— विनोद कुमार त्रिपाठी

जल संचयन

पृथ्वी को अक्सर जल ग्रह कहा जाता है। वर्षा के माध्यम से जल घटता भी है और बढ़ता भी है। इसलिए कई लोगों का कहना है कि पानी की चिंता करने की फिर क्या जरूरत है। वास्तव में विश्व के जल भंडार का केवल 1% ही हमारे उपयोग के लायक है। हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या और शहरी विकास की वजह से जल संसाधनों के ऊपर भारी दबाव है। भूजल और इस जल स्रोत का लगातार दूषित होना शुद्ध पेयजल की उपलब्धता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है। भूजल पर बढ़ती निर्भरता के कारण जल स्तर गिरा है और उसकी पुनः पूर्ति भी इस कारण बाधित हुई है। साल भर में वर्षा 4000 मिमी होती है और इसका वितरण भी इतना असमान है कि किसी राज्य में कभी अतिवृष्टि के कारण बाढ़ की स्थिति हो जाती है तो किसी राज्य में बारिश बिल्कुल नहीं होती है और वहां सुखाड़ जैसी स्थिति बन जाती है। पेयजल, सिंचाई, बढ़ती जनसंख्या के कारण जल की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। हम लोग अभाव की दिशा में बढ़ रहे हैं। वहीं जल प्रबंधन संकटपूर्ण स्थिति में है। जल स्रोत विशेषकर नदियां शहरी जिंदगी और औद्योगिक कचरे से प्रदूषित हुई है। आज विश्व का ध्यान सुरक्षित और प्रयाप्त पर जल उपलब्धता पर केंद्रित हो रहा है। कहा जाता है कि भविष्य में होने वाला अगला तीसरा विश्वयुद्ध इस जल को ही लेकर होगा।

जल की कमी ने विकास में बाधा खड़ी की है। स्थानीय स्तर पर जल की उपलब्धता स्थानीय विकास और आर्थिक नीति को प्रभावित करती है। पेयजल की कमी एक संकट बनती जा रही है। जलस्तर का लगातार नीचे जाना जारी है। बारिश से प्राप्त किया हुआ पानी बहकर सागर में मिल जाता है अर्थात् यह पानी का संचयन और पुनर्उपयोग करना अति आवश्यक है ताकि उसे भूजल साधनों का संवर्धन संभव हो जाए। अपने देश भारत में भूजल का भंडारण 214 बिलियन घन मीटर है। 107 बिलियन घनमीटर की पुनः प्राप्ति हो सकती है। इस समस्या का एक ही समाधान है वह है जल संचयन। सतत जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए वर्षा जल संचयन, भूजल के रिचार्ज, एवं टंकी में भंडारण किया जा सकता है।

भारत में पिछले 4000 वर्षों से वर्षा जल का संचयन कर प्रयोग किया जाता रहा है। भारतीय रेल के पास पर्याप्त जमीन उपलब्ध है जिस में गिरने वाले पानी का संचयन कर पानी की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है। रेलवे स्टेशन और रेलवे आवास को जल की व्यवस्था इसी संचित जल से की जा सकती है। यदि हम वर्षा जल का संचयन करते हैं तो जल की कमी को काफी हद तक कम कर सकते हैं। वर्षा जल का मुख्य हिस्सा जमीन की सतह से बहकर नदी एवं नदी से समुद्र में बह जाता है। केवल 8 प्रतिशत वर्षा जमीन के जलवाही स्तर को रिचार्ज करती है। अगर हम उचित ढंग से वर्षा जल संचयन करें तो जल की उपलब्धता को 50% तक बढ़ाया जा सकता है।

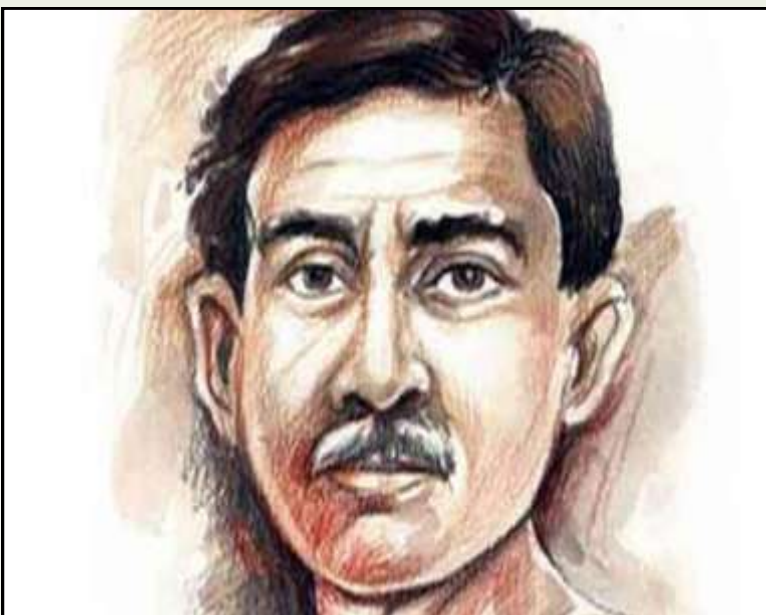
शहरी क्षेत्रों में वर्षा के जल को संचित करने के लिए बहुत सी संचित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में वर्षा जल संचयन गली, कंटूर बाँध, जेवियर संरचना, परलोकेशन टैंक, चेक डैम, छोटे-छोटे कूपो और भूमि जल बाँध, व छत से प्राप्त वर्षा जल को संचित कर किया जा सकता है। शहरी क्षेत्र में वर्षा जल का संचयन को प्रोत्साहन देने के लिए भवन निर्माण संबंधी कानूनों में आवश्यक बदलाव किए जाने चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर की छत पर एकत्रित जल को यूँ ही व्यर्थ ना जाने दे कर उसे अपने घर के नीचे बने रिजर्वर या टंकी में संचित करें और फिर उस जल का उपयोग करें। इसका फायदा यह होगा कि वर्षा जल जो बहकर नदी नालों से होता हुआ समुद्र में जाकर मिल कर यूँ ही व्यर्थ हो जाता है उसका उपयोग दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जा सकेगा और इससे भूजल का दोहन पर भी कमी आएगी।

— सुप्रिया आर

प्रेमचंद की रचनाओं का माडर्न वैल्यू

गठीला बदन, गोरी सूरत, घनी काली भवें, छोटी छोटी आंखें, विरल मूछों वाला ये चेहरा किसका है ? बनारस से 4 मील दूर लमही गांव में शनिवार 31 जुलाई 1880 को धनपतराय का जन्म हुआ था। चाचा नवाब कहा करते थे। पिता अजायब राय डाकघर में साधारण से किरानी थे। माता आनंदी 7 वर्ष की उम्र में ही चल बसी। माता के बिछड़ने से उनका सारा बचपन छीन गया। गरीबी और अभाव तो पहले से ही था। विमाता का निष्ठु व्यवहार, डांट-फटकार और प्रताड़ना ने धनपत राय के जीवन को दुखी कर दिया। ऐसा लगता है कि प्रेमचंद्र अपने उपन्यास कर्मभूमि के पात्र चंद्रकांत के द्वारा खुद अपने ही व्यथा सुना रहे हैं- बचपन वह उम्र है जब इंसान को मोहब्बत की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। उस वक्त पौधे को तरी मिल जाए तो जिंदगी भर के लिए उसकी जड़ें मजबूत हो जाती है। मेरी मां के देहांत के बाद मेरी रूह को खुराक नहीं मिली वही भूख मेरी जिंदगी है।

उपन्यास सम्राट और कहानीकार के रूप में प्रेमचंद को सभी जानते हैं लेकिन वह एक मजे हुए पत्रकार भी थे यह कम लोग जानते हैं। उन्होंने जमाना, माधुरी, आजाद, मर्यादा आदि का सफल संपादन किया। अपनी कड़ी मेहनत और अनुभव के बल पर उन्होंने 1930 में हंस निकाला और 1932 में जागरण। प्रेमचंद ने हमेशा अभाव, कष्ट, गरीबी, रोग और कर्ज में अपना जीवन व्यतीत किया। 8 अक्टूबर 1936 को यह हमारा साहित्यकार और पत्रकार सदा के लिए सो गया। मात्र 56 वर्ष की अल्प अवधि में उन्होंने 300 से अधिक कहानी, दर्जनभर उपन्यास और प्रमुख नाटकों से हिंदी साहित्य को समृद्धि किया जो इनकी अनुपम निधि है।



प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में वही लिखा जो उन्होंने देखा, सुना और महसूस किया। वह पहले साहित्यकार है जिन्होंने कहानी उपन्यास को मनोरंजन की दुनिया से बाहर निकालकर मानव जीवन की सार्थकता से जोड़ा। उपन्यास के उदय को मध्यम वर्ग से ना जोड़कर किसान और मजदूरों की समस्या से जोड़ा। सामाजिक विषमता, अत्याचार, शोषण और उत्पीड़न का उन्होंने सच्चा चित्रण अपनी लेखनी के माध्यम से किया है।

बेटा क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बातें नहीं कहोगे? यह पंक्ति प्रेमचंद्र की कहानी पंच परमेश्वर की है। अलगू चौधरी और जुम्मन शेख में गहरी दोस्ती रहती है। पंचायती को लेकर ही दोनों में मनमुटाव हो जाता है। दोनों जब कभी भी मिलते हैं तो ठीक उसी तरह मिलते हैं जिस तरह ढाल से तलवार मिलती है। जुम्मन अपनी खाला की सारी जगह अपने नाम करवाने के बाद उसकी ठीक ढंग से परवरिश नहीं करता था। पेट भर खाना तक नहीं देता था। पंचायती के लिए खाना जुम्मन के दोस्त अलगू चौधरी को अलग पंच चुनना चाहती है। वह कहता है कि उसने मेरा बिगाड़ा है।

10

इसके बाद उक्त पंक्ति खाला ने जुम्मन से कही। इस पंक्ति में इतनी वेदन क्षमता है कि उसकी अंतरात्मा जग जाती है। अलगू चौधरी पंच बनना स्वीकार कर लेता है। पंचायती आज भी होती है लेकिन पंच में परमेश्वर का निवास होता है, इस भाव का अभाव आज पाया जाता है। प्रेमचंद ने हर समस्या के समाधान व हर विवाद के हल के लिए एक मंत्र दिया है और वह संवाद। यदि संवाद का बेहतर ढंग से समन्वय हो तो आज कोर्ट कचहरी में इतने अधिक मामले लंबित नहीं रहेंगे और इसे पंचायत के स्तर पर ही सुलझा लिया जा सकता है।

बेटा जब पढ़ लिख कर बड़ा होता है तो बूढ़े बाप की आंखों में कई आशाएं जन्म लेती हैं और अनेक अपेक्षाएं तैरती रहती हैं।

नमक का दरोगा कहानी में मुंशी वंशीधर जब नौकरी तलाशने के लिए घर से निकलते हैं तो उनके पिता कहते हैं कि बेटा घर की स्थिति देख रहे हो कोई ऐसी नौकरी खोजना जिसमें ऊपरी आमदनी भी हो। इसमें ओहदे को मत देखना यह तो पीर का मजार है। सामने वाले की कद को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो, उसके साथ सख्ती बरतने से फायदा ही फायदा है। गैरजरूरी वालों के साथ सख्ती बरतने से उल्टा असर हो जाता है। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है जो एक बार दिखाई देता है और धीरे-धीरे घटता है। मासिक वेतन इंसान देता है और ऊपरी आमदनी भगवान देता है। इसमें इतनी बरकत होती है/उसे नौकरी मिल जाती है वह भी नमक के दरोगा के पद पर। प्रेमचंद ने इसके माध्यम से भ्रष्ट समाज की मनोदशा का इतना सजीव चित्रण किया है कि मन थोड़ी देर के लिए सोचने को विवश हो जाता है।

सामाजिक रसूख वाले पंडित अलोपीदीन की नमक से लदी गाड़ी को मुंशी वंशीधर रोक देते हैं। मोलभाव होता है लेकिन वह डिगते नहीं हैं। वह दरोगा के पद से सस्पेंड कर दिए जाते हैं। सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं। आज भी सत्य निष्ठा से काम करने वाले लोग सस्पेंड और ट्रांसफर किए जाते हैं। कुछ दिन बाद पंडित अलोपीदीन वंशीधर के घर पर हाथ जोड़े जाते हैं उनसे विनती कर अपने यहां मैनेजर के पद पर पहले से अधिक वेतन पर बहाल कर लेते हैं। उन्हें एक ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की तलाश थी अपने मैनेजर के लिए, जो उन्हें मुंशी वंशीधर के रूप में मिला इस पर प्रेमचंद्र अधर्म पर धर्म की विजय का चित्रण किया है।

प्रेमचंद नारी मनोविज्ञान के गहरे पारखी थे। गोदान में उन्होंने कहा है कि पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है और यदि नारी में पुरुष के गुण आ गए तो कुलटा बन जाती है। नारी केवल माता है और उसके उपरांत वह जो कुछ भी है जब वह मातृत्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना है, सबसे बड़ी तपस्या और सबसे बड़ा त्याग है।

प्रेमचंद बाल मनोविज्ञान और मानवीय संवेदना के सफल चित्रकार हैं। ईदगाह कहानी में उन्होंने दिखाया कि मेले में बच्चे अपनी पसंद की चीजें और खाने पीने की वस्तुओं को खरीद कर घर लाते हैं लेकिन हामिद खाने पीने की चीज नहीं खरीद कर अपनी दादी के लिए चीमटा खरीद कर लाता है क्योंकि रोटी पकाते वक्त तो उसकी दादी के हाथ जल जाया करते थे। हामिद के दिल में अपने दादी के लिए इतनी गहरी संवेदना अन्यत्र दुर्लभ है।

**कला केवल यर्थाथ की नकल का नाम नहीं हैं
कला दिखती तो यर्थाथ हैं,
पर यर्थाथ होती नहीं हैं।
उसकी खूबी यही हैं
की यर्थाथ मालूम हो !**

मुंशी प्रेमचंद



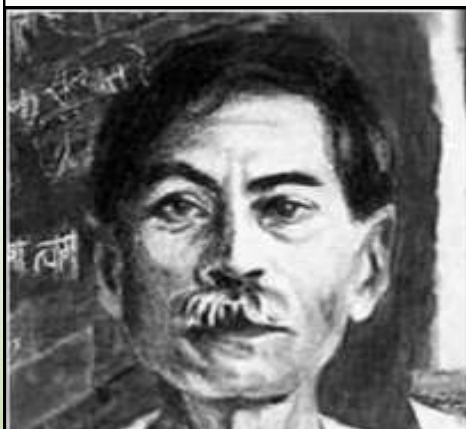
हिरा और मोती नामक दो बैलों की कथा सिर्फ दो बैलों की कथा नहीं है बल्कि उसमें मानवीयता और करुणा भी है। उसमें आजादी की कोशिश की व्यथा है अपने मालिक के प्रति प्रेम है। ऐसा मानवीकरण दुनिया के साहित्य में बिरले ही देखने को मिलेगा। मोती बदला लेना चाहता है उस मालिक से जो उसे झूरी के यहां से जबरदस्ती लेकर आया है। लेकिन उसके मन में ख्याल आता है इससे तो वह बालिका अनाथ हो जाएगी जो उसे रोटी खिलाती है।

ऊर्जा संरक्षण सिद्धांत के अनुसार ऊर्जा नष्ट नहीं होती बल्कि उसका रूप बदल जाता है। जिस प्रकार सामाजिक व्यवस्था, शोषण, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार का वर्णन प्रतीकों के माध्यम से प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किया है वह कमोबेश आज भी मौजूद है। यदि कोई कहता है कि उसके बेटे का कैपस हो गया है तो इसका मतलब है कि उसकी नौकरी हो गई है। पैकेज वेतन का बदला हुआ रूप है। कमीशन, रिश्तत उपरि आमदनी बन गई है।

आजादी के बाद मिश्रित अर्थव्यवस्था और उदारवाद आदि व्यवस्था अपनाई गई। इसमें भ्रष्टाचार बेतहाशा बढ़ा, धनकुबेरों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई। आज बच्चे और मां कुपोषण के शिकार होती है। किसान का कर्ज बढ़ता जा रहा है जिसके कारण उसे आत्महत्या को मजबूर होना पड़ रहा है। सूदखोरी और महाजनी सभ्यता फल फूल रही है। धन और शासन के तालमेल से थाना, पुलिस, कोर्ट, कचहरी की व्यवस्था में कोई खास बदलाव नहीं आया है। आज भी पूंजी और सत्ता की सांठगांठ से क्रोनीक कैपिटलिज्म का निर्माण हुआ है जिसे सांठगांठ की पूंजीवादी व्यवस्था भी कहा जाता है।

प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उनकी लेखनी आम जनता की सबसे बड़ी हिमायती है क्योंकि वह शोषित उपेक्षित, गरीबों और वंचितों के प्रवक्ता है।

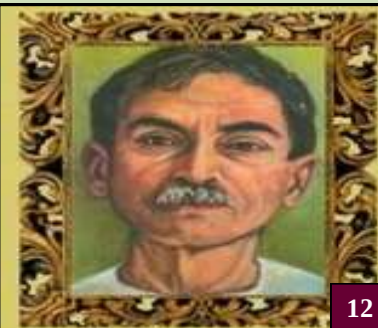
—सुवास पाठक



खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है,
जीवन नाम है, आगे बढ़ते रहने की लगन का

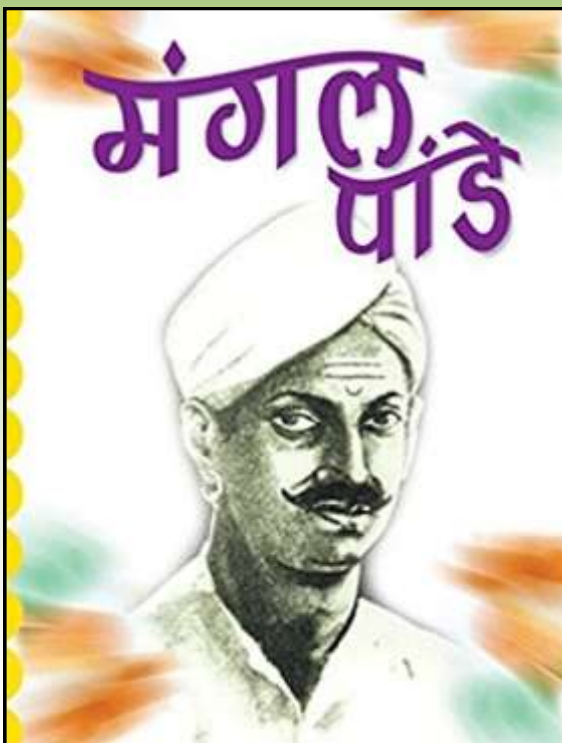
~ मुंशी प्रेमचंद

कविता सच्ची भावनाओं का चित्र हैं
और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुख की हो
या सुख की, उसी समय सम्पन्न होती हैं
जब हम दुख या सुख का अनुभव करते हैं!



मंगल पांडे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत थे। उनके द्वारा भड़काई गई क्रांति की ज्वाला से अंग्रेज शासन बुरी तरह हिल गया। मंगल पाण्डेय का जन्म 30 जनवरी 1831 को संयुक्त प्रांत के बलिया जिले के नगवा गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम दिवाकर पांडे तथा माता का नाम श्रीमती अभय रानी था। सामान्य ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण युवावस्था में उन्हें रोजी-रोटी की मजबूरी में अंग्रेजों की फौज में नौकरी करने पर मजबूर कर दिया। वो सन 1849 में 22 साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए। मंगल बैरकपुर की सैनिक छावनी में “34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री” की पैदल सेना में एक सिपाही थे।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में विस्तारवादी नीति और रियासत व राज हड़प की निरंतर कोशिशों तथा इशाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तर के कारण लोगों के मन में अंग्रेजी हुकुमत के प्रति नफरत पैदा कर दी और जब कंपनी की सेना की बंगाल इकाई में ‘एनफील्ड पी.53’ राइफल में नई कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ तो मामला और



बिगड़ गया। इन कारतूसों को बंदूक में डालने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था और भारतीय सैनिकों के बीच ऐसी खबर फैल गई कि इन कारतूसों को बनाने में गाय तथा सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता है। सैनिकों मन में ये बात बैठ गयी कि अंग्रेज हिन्दुस्तानियों का धर्म भ्रष्ट करने पर अमादा हैं क्योंकि ये हिन्दू और मुसलमानों दोनों के लिए अपवित्र था।

9 फरवरी 1857 को जब ‘नया कारतूस’ देशी पैदल सेना को बांटा गया तब मंगल पाण्डेय ने उसे लेने से इनकार कर दिया इसके परिणाम स्वरूप कंपनी शासन ने उनके हथियार छीन लिये जाने व वर्दी उतार लेने का हुक्म दिया। मंगल पाण्डेय ने उस आदेश को मानने से इनकार कर दिया और 29 मार्च सन् 1857 को उनकी राइफल छीनने के लिये आगे बढ़े अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन पर आक्रमण कर दिया।

संदिग्ध कारतूस का प्रयोग ईस्ट इंडिया कंपनी शासन के लिए घातक सिद्ध हुआ। पूरी रेजीमेंट ने मंगल पांडेय के नेतृत्व में बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया। हालाँकि अंग्रेजों ने मंगल पाण्डेय द्वारा भड़काई गई क्रांति को दबा दिया परंतु बाद में मंगल पांडे की शहादत ने देश में जो क्रांति के बीज बोए उसने अंग्रेजी हुकुमत को 100 साल के अन्दर ही भारत से उखाड़ फेंका।

यह भले ही भारत के स्वाधीनता का प्रथम संग्राम न रहा हो पर यह क्रांति निरंतर आगे बढ़ती गयी। अंग्रेजी हुकुमत ने उन्हें गद्दार और विद्रोही की संज्ञा दी। सन 1857 की क्रांति के दौरान मंगल पाण्डेय ने एक ऐसे विद्रोह को जन्म दिया जो जंगल में आग की तरह सम्पूर्ण उत्तर भारत और देश के दूसरे भागों में भी फैल गया। मंगल पांडे द्वारा लगायी गयी विद्रोह की यह चिंगारी बुझी नहीं। एक महीने बाद ही 10 मई सन् 1857 को मेरठ की छावनी में बगावत हो गयी। यह विप्लव देखते ही देखते पूरे उत्तरी भारत में फैल गया जिससे अंग्रेजों को स्पष्ट संदेश मिल गया कि अब भारत पर राज्य करना उतना आसान नहीं है जितना वे समझ रहे थे। इसके बाद ही हिन्दुस्तान में चौत्तीस हजार सात सौ पैंतीस अंग्रेजी कानून यहाँ की जनता पर लागू किये गये ताकि मंगल पाण्डेय सरीखा कोई सैनिक दोबारा भारतीय शासकों के विरुद्ध बगावत न कर सके। भारत सरकार ने 5 अक्टूबर 1984 में मंगल पांडे के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। — श्वेता त्रिपाठी

संथाल हूल

वैसे तो स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई 1857 में मानी जाती है, मगर इसके पहले ही वर्तमान के झारखंड राज्य के संथाल परगना में 'संथाल हूल' और 'संथाल विद्रोह' के द्वारा अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। सिद्धू-कान्हू दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून 1855 को वर्तमान साहेबगंज जिले के भगनाडीह गांव से प्रारंभ हुए इस विद्रोह के मौके पर सिद्धू ने घोषणा की थी- 'करो या मरो', 'अंग्रेजो हमारी माटी छोड़ो'।

संथाल परगना के लोग प्रारंभ से ही वनवासी स्वभाव से धर्म और प्रकृति के प्रेमी तथा सरल हृदय होते हैं। उनके इस सरलता का जमींदारों और बाद में अंग्रेजों ने इसका खूब लाभ उठाया। अभिलेखों के अनुसार इस क्षेत्र में अंग्रेजों ने राजस्व के लिए संथाल, पहाड़ियों



तथा अन्य निवासियों पर मालगुजारी लगा दी। इसके बाद न केवल यहां के लोगों का शोषण होने लगा, बल्कि उन्हें मालगुजारी भी देना पड़ने लगा। इस कारण यहां के आदिवासियों में विद्रोह पनपने लगा। इस विद्रोह को 'संथाल हूल' कहा गया परंतु वास्तव में यह संथाल परगना के समस्त गरीबों और शोषितों द्वारा शोषकों, अंग्रेजों एवं उसके कर्मचारियों के विरुद्ध मुक्ति आंदोलन था। इस जन आंदोलन के नायक भोगनाडीह निवासी सिद्धू, कान्हू, चांद और

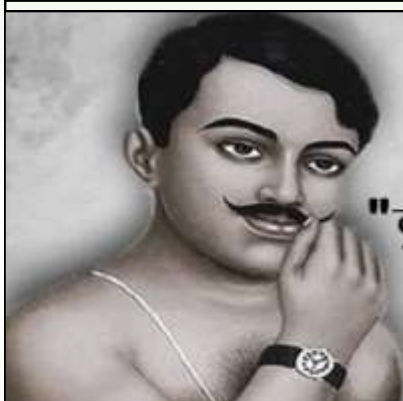
भैरव थे।

इन चारों भाइयों ने लगातार लोगों के असंतोष को एक आंदोलन का रूप दिया। बोंगा जिसे संथाल जनजाति अपने आराध्य के रूप में पूजा करती है के बारे में आंदोलन को धार देने के लिए उस समय संथालों को बताया गया कि सिद्धू को स्वप्न में बोंगा जिनके हाथों में बीस अंगुलियां थीं, ने बताया है कि 'जुमींदार, महाजोन, पुलिस आर राजरेन अमलो को गुजुकमा' (अर्थात् जमींदार, पुलिस, राज के अमले और सूदखोरों का नाश हो)। इस संदेश को मांदर (डुगडुगी) पिटवाकर तथा गांवों-गांवों तक पहुंचाया गया। इस दौरान लोगों ने साल की टहनी को लेकर गांव-गांव यात्रा की और लोगो को अंग्रेजी हकूमत के विरुद्ध संगठित किया। आंदोलन को कार्यरूप देने के लिए परंपरागत शास्त्रों से लैस होकर 30 जून 1855 को 400 गांवों के लोग भगनाडीह पहुंचे और आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस क्रांति को दबाने के लिए 11 जुलाई को बहरामपुर के तत्कालीन मजिस्ट्रेट टुगुड देना लेकर वहां पहुंचे, उस दौरान हुई हिंसा में लगभग 200 संथाल घायल हुए और कई मारे गए। इसी सभा में यह घोषणा कर दी गई कि वे अब कंपनी शासन को मालगुजारी नहीं देंगे। इसके

बाद अंग्रेजों ने इन चारों भाइयों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। जिस पुलिस दरोगा को इन्हें गिरफ्तार करने के लिए भेजा गया था उसकी गर्दन काट कर हत्या कर दी गई। इस घटना के बाद सरकारी अधिकारियों में भी इस आंदोलन को लेकर भय प्राप्त हो गया था।

उस समय भागलपुर कमिशनरी मुख्यालय हुआ करता था। सभी सरकारी कार्यालयों की सुरक्षा कड़ी कर दी गई। इस क्रांति के संदेश के कारण संचालपरगना में अंग्रेजों का शासन लगभग समाप्त हो गया था। अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबाने के लिए इस क्षेत्र में सेना भेज दी और कई गिरफ्तारियां की। आंदोलनकारियों को नियंत्रित करने के लिए मार्शल लॉ लगा दिया गया। आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी के लिए लोगों को प्रलोभन दिया जाने लगा। पुरस्कारों की घोषणा की गई। अंग्रेजों और आंदोलनकारियों की लड़ाई में चांद और भैरव शहीद हो गए। इस युद्ध में करीब 20 हजार वनवासियों ने अपनी जान दी थी। विश्वस्त साथियों को पैसे का लालच देकर सिद्धू और कान्हू को भी गिरफ्तार कर लिया गया और फिर 26 जुलाई को दोनों भाइयों को भोगनाडीह गांव में खुलेआम एक पेड़ पर टांगकर फांसी की सजा दे दी गई। आज भी लोग इन चारों भाइयों को अपना आदर्श मानते हैं। हर साल भोगनाडीह में इन अमर शहीदों के नाम राजकीय समारोह आयोजित किया जाता है।

— इन्द्रज्योति राय



मैं आजाद हूँ

"दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे,
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे"

- चंद्र शेखर आजाद

बात 1921 की है जब महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन प्रारंभ किया तो चन्द्रशेखर भी एक दिन धरना देते हुए पकड़े गये। उन्हें पारसी मजिस्ट्रेट मि. खरेघाट के अदालत में पेश किया गया। मि. खरेघाट बहुत कड़ी सजाएँ देते थे। उन्होंने बालक चन्द्रशेखर से उसकी व्यक्तिगत जानकारी के बारे में पूछना शुरू किया -

"तुम्हारा नाम क्या है?" "मेरा नाम आजाद है।" "तुम्हारे पिता का क्या नाम है?" "मेरे पिता का नाम स्वाधीन है।" "तुम्हारा घर कहाँ पर है?" "मेरा घर जेलखाना है।"

मजिस्ट्रेट मि. खरेघाट इन उत्तरों से चिढ़ गए। उन्होंने चन्द्रशेखर को पन्द्रह बेंतों की सजा सुना दी। उस समय चन्द्रशेखर की उम्र केवल चौदह वर्ष की थी। जल्लाद ने अपनी पूरी शक्ति के साथ बालक चन्द्रशेखर की निर्वसन देह पर बेंतों के प्रहार किए जा रहा था। प्रत्येक बेंत के साथ कुछ खाल उधड़कर बाहर आ जाती थी। पीड़ा सहन कर लेने का अभ्यास चन्द्रशेखर को बचपन से ही था। वह हर बेंत के साथ "महात्मा गांधी की जय" या "भारत माता की जय" बोलते जाते थे। जब पूरे बेंत लगाए जा चुके तो जेल के नियमानुसार जेलर ने उसकी हथेली पर तीन आने पैसे रख दिए। बालक चन्द्रशेखर ने वे पैसे जेलर के मुँह पर दे मारे और भागकर जेल के बाहर हो गया। इस पहली अग्नि परीक्षा में सम्मानरहित उत्तीर्ण होने के फलस्वरूप बालक चन्द्रशेखर का बनारस के ज्ञानवापी मोहल्ले में नागरिक अभिनन्दन किया गया। अब वह चन्द्रशेखर से आजाद कहलाने लगा।

— मानसिंह मार्टी

चम्पारन सत्याग्रह

चम्पारन सत्याग्रह का प्रारम्भ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया था। अंग्रेज बागान मालिकों ने चम्पारन के किसानों से एक अनुबन्ध करा लिया था, जिसमें उन्हें नील की खेती करना अनिवार्य था। हजारों भूमिहीन मजदूर एवं गरीब किसान खाद्यान्न के बजाय नील और अन्य नकदी फसलों की खेती करने के लिये बाध्य हो गये थे। नील की खेती करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। अंग्रेजों इन किसानों का खूब शोषण कर रहे थे। कुछ बगान मालिक भी इनपर जुल्म ढा रहे थे। 19वीं शताब्दी के अन्त में रासायनिक रंगों की खोज और उनके प्रचलन से नील के बाज़ार में गिरावट आने लगी, जिससे नील बागान के मालिक अपने कारखाने बंद करने लगे।



किसान भी नील की खेती से छुटकारा पाना चाहते थे। गोरे बागान मालिकों ने किसानों की मजबूरी का फ़ायदा उठाकर अनुबन्ध से मुक्त करने के लिए लगान को मनमाने ढंग से बढ़ा दिया, जिसके परिणामस्वरूप विद्रोह शुरू हुआ। अंग्रेजों ने किसानों की मजबूरी का लाभ उठाकर पर लगान बढ़ा दिया। इसी के फलस्वरूप विद्रोह प्रारम्भ हो गया। 1909 में गोरले नामक एक अधिकारी को भेजा गया। तब नील की खेती में पंचकठिया प्रथा चल रही थी यानी एक बीघा जमीन के पांच कट्टे में नील की खेती अनिवार्य थी। 'इस आंदोलन का ही असर रहा कि पंचकठिया की प्रथा तीनकठिया में बदलने लगी यानी रैयतों को पांच की जगह तीन कट्टे में नील की खेती करने के लिए निलहों से कहा। लेकिन 1907-08 के इस आंदोलन के बाद गांधी को चंपारण लाने में और उन्हें सत्याग्रही बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही राजकुमार शुक्ल की। चंपारण सत्याग्रह के इतिहास में राजकुमार शुक्ल की भूमिका को काफी अहम हैं।

सब जानते हैं कि ये राजकुमार शुक्ल ही थे जो गांधी को चंपारण लाने की कोशिश करते रहे। महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के इस अत्याचार से चम्पारन के किसानों का उद्धार कराया। इसका परिणाम यह हुआ कि बिहार वालों के लिए वे देव तुल्य बन गये। 1917 में राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गांधीजी स्थिति का जायजा लेने वहाँ पहुँचे। उनके दर्शन के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। किसानों ने अपनी सारी समस्याएँ बताईं। उधर पुलिस भी हरकत में आ गई। पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने गांधीजी को जिला छोड़ने का आदेश दिया। गांधीजी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। अगले दिन गांधीजी को कोर्ट में हाजिर होना था। हजारों किसानों की भीड़ कोर्ट के बाहर जमा थी। गांधीजी के समर्थन में नारे लगाये जा रहे थे। हालात की गंभीरता को देखते हुए मेजिस्ट्रेट ने बिना जमानत के गांधीजी को छोड़ने का आदेश दिया। लेकिन गांधीजी ने कानून के अनुसार सजा की माँग की।

चम्पारन के किसानों से अंग्रेज बागान मालिकों ने एक अनुबन्ध करा लिया था। इस अनुबन्ध के अंतर्गत किसानों को ज़मीन के 3/20वें हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था। इसे 'तिनकठिया पद्धति' कहते थे। जुलाई, 1917 ई. में 'चम्पारण एग्रेसियन कमेटी' का गठन किया गया। गाँधी जी भी इसके सदस्य थे। इस कमेटी के प्रतिवेदन पर 'तिनकठिया प्रणाली' को समाप्त कर दिया तथा किसानों से अवैध रूप से वसूले गए धन का 25 प्रतिशत वापस कर दिया गया। 1919 ई. में 'चम्पारण एग्रेसियन अधिनियम' पारित किया गया, जिससे किसानों की स्थिति में सुधार हुआ। बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी चंपारण से 'महात्मा' बनकर लौटे। और फिर भारत की राजनीति में एक नई धारा की शुरुआत की। गांधी 1917 में चंपारण आए तो सबने जाना। गांधी चंपारण आने के बाद महात्मा बने, उसकी कहानी भी दुनिया जानती है।

— कैलाश चंद्र धारिया



जब सूरज संग हो जाए अँधेरा,
तब दीये का जलना जरूरी है
लगने लगे जब बोली प्यार की,
तब प्रेम बचाना जरूरी है।

खतरा हो मातृभूमि को गद्दारों से,
तब उन्हें मिटाना जरूरी है।
गुमराह हो रहें हो देश के युवा,
तो राह सही दिखाना जरूरी है।

हर और फैली हो निराशा जब,
बिगुल क्रांति का बजाना जरूरी है।
हो जाय जब नारी असुरक्षित
तो उसे लक्ष्मीबाई बनाना जरूरी है।

सत्ता के लोलुपों से देश को बचाने,
एक और सुभाष जरूरी है।
बदले न देश तरीकों से,
तब एकबार फिर विद्रोह जरूरी है।

मनीष कुमार

अपना देश



नदीयां, झरनें झीलों की यह छटा मनमोहक है,
कुसुम सुमन से सजी मेरे देश की छटा अनुपम है।
सरिता-सी बहती संस्कृति की सुवास अनोखी है
विश्व में फैली मेरे देश की बयार अनोखी है।

धरती अपनी एक एक ही घर परिवार है।
मेरे देश की पावन परिपाटी को प्रणाम है।
कम नहीं मलय से यह धरा अपनी।
हर शख्स इस देश का मिलनसार है।

मुरली की तान पर नाचती गोपियां यहां है।
भक्ति से सराबोर रचना रचते रसखान है।
रहीम, अब्दुल के साथ तुलसी गाते गीत वितान है।
चंद्रशेखर, बिस्मिल, अशफाक कुरबान होते यहां है।

पूजा कुमारी

पर्यावरण



मैं प्रकृति हूँ यह है मेरे आवरण
जिसे लोग कहते हैं पर्यावरण ॥

इसे प्रदूषित कर करके
नित क्रोध मेरे भड़काते हो ।
कभी अतिवृष्टि अनावृष्टी
और बाढ़ द्वार तक लाते हो ॥

कर प्रदूषित इसको तुम
क्या सुखी जीवन रह पाओगे ।
ग्लोबल वार्म होगी धरती
फिर गृह कहां बनाओगे ॥

अति क्रोधित जब होऊंगा मैं
महा प्रलय का ताण्डव होगा ।
शून्य हो जाएगी मही
सर्वत्र जल मय होगा ॥

मेरी आवरण खींचो न तुम
नित्य नए पौधा लगवाओ
चखो उसका अमृत फल
और गीत अमन का गाओ ॥
वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओ ॥

बेटी

हर घर की श्रृंगार है बेटी
नहीं किसी पर भार है बेटी
कदम कदम पर प्रेम बांटती
मां के आँचल की प्यार है बेटी ॥

सेवा को तत्पर रहती है
शान्ति की अवतार है बेटी ।
शोभा है वो घर आंगन की
सृष्टि की आधार है बेटी ॥

सजी धजी दुल्हन सी प्यारी
लक्ष्मी की अवतार है बेटी ।
जन्म पर इसके जश्र बजाओ
अभिशाप नहीं वरदान है बेटी ॥

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
अपने घर को स्वर्ग बनाओ ॥



विनय कुमार झा की दो कवितायें

**मालदा मंडल राजभाषा विभाग द्वारा पर्यावरण हितैषी: भारतीय रेल विषय पर
आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के कुछ दृश्य**



मालदा मंडल कार्यालय के भूतल पर प्रदर्शित भारतीय रेलवे के विकास की प्रतिकृतियों की झलक

